श्री शान्तिनाथ जिन पूजा

(रचयिता-आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज)

अनुपम शिवशांति प्रदायक प्रभु, हे 'शांतिनाथ' दो शांति हमें।
चैतन्य जलधि में वास करुँ, दे दो सम्यक् विश्रान्ति हमें॥
चक्री तीर्थंकर कामदेव, त्रयपद के धारी कहलाते।
प्रभु! मुझको पद की चाह नहीं, हम तो पद रज पाने आते॥
हे नाथ! आपकी पद-रज से, रत्नत्रय पद को पाऊँगा।
आह्वानन् स्थापन सन्निधि करके, प्रभु को हृदय बुलाऊँगा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(परिपुष्पांजलिं क्षिपामि)

शुचिज्ञान जलधि से जलभरकर, लाया हूँ नाथ चढ़ाने को।
दुःखदायक जन्म-जरा-मृत्यु, अपने त्रय रोग मिटाने को॥
हे शांतिनाथ! दुःख के हर्ता, अब मेरा भवदुःख हरण करो।
मैं शुद्धातम में रमण करुँ, हे नाथ! समाधिमरण वरो॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

रागादिक सर्व विभाव भाव, कहलाते हैं भव ताप प्रभो!।
अर्पित चरणों शीतल चन्दन, मेंटो अब भव संताप विभो॥
हे शांतिनाथ!... ॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

पद की ममता में फँसकर प्रभु! शुद्धातम पद खोता आया।
अक्षय पद की अब चाह मुझे, अक्षत मोती सम भर लाया॥
हे शांतिनाथ!... ॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

निज ब्रह्मचर्य की शक्ति से, प्रभु तुमने काम नशाया है।
पुष्पांजलि अर्पित करने को, यह भक्त शरण में आया है॥
हे शांतिनाथ!... ॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

रसना की तृष्णा के कारण, अणु-अणु को ग्रास बना डाला।
नहिं क्षुधा वेदना हुई शमन, मानो पावक में घी डाला॥
हे शांतिनाथ!... ॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोहान्धकार में भटक-भटक, चारों गति में भरमाया हूँ।
अज्ञान मोह का नाश करुँ, मैं जगमग दीपक लाया हूँ॥
हे शांतिनाथ!... ॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

काषायिक भाव रहित ऐसी, स्वाभाविक अग्नि जलाई है।
कर्माष्ट धूप खेकर तुमने, त्रिभुवन में गंध उड़ाई है॥
हे शांतिनाथ!... ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

सारे फल निष्फल हुये प्रभो! अब शिवफल की है चाह मुझे।
उत्तम-उत्तम भावों के फल, भावों से अर्पित करुँ तुझे॥
हे शांतिनाथ!... ॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्य मिला, शुभ अर्घ्य लिये गुणगान करुँ।
पाऊँ अनर्घ्य पद हे स्वामिन्!, अर्पित कर तेरा ध्यान करुँ॥
हे शांतिनाथ!... ॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक

भादों श्यामा सप्तमि को, सर्वार्थ त्याग गजपुर को।
माँ ऐरा गर्भ समाये, हम पूजैं ध्यान लगाये॥1॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्णा सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे त्रिभुवन सुखदाई, वदि जेठ चतुर्दशि आई।
इन्द्रों ने जोड़े हाथा, हम चरण झुकायें माथा॥2॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

थी जेठ चतुर्दशि काली, शुद्धात्म ध्यान खुशहाली।
वन में तपयोग सम्हारा, हम पूजैं सौख्य अपारा॥3॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दश्यां तप कल्याणक प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिन पौष शुक्ल दसमी का, उद्योत ज्ञान रश्मि का।
प्रभु घाती कर्म नशाया, सुर नर किन्नर यश गाया॥4॥

ॐ ह्रीं पौष शुक्ला दशम्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

थी जेठ चतुर्दशि कारी, सम्मेद गिरी सुखकारी।
प्रभु कर्म अघाति नशाये, मुक्ती पद तत्क्षण पाये॥5॥

ॐ ह्री ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(तर्ज-हे दीन बन्धु...)

हे शांतिदाता शांतिनाथ जय हो तुम्हारी।
भव्यों के त्राता शांतिनाथ जय हो तुम्हारी॥
करुणा निधान शांतिनाथ जय हो तुम्हारी।
त्रिभुवन की शान शांतिनाथ जय हो तुम्हारी॥
आदित्यगति मुनि को जब आहार दिया था।
आहारदान में प्रसिद्ध नाम किया था॥
श्री षेण की पर्याय को तुमने सफल किया।
स्वामिन्! असाता कर्म को तुमने विफल किया॥
तुम विश्वसेन पिता, माँ ऐरा की शान हो।
सोलहवें तीर्थेश हो, जग में महान हो॥
बारहवें कामदेव कहाते हो आप ही।
चक्री हो पाँचवे, है पुण्य का प्रताप ही॥
होकर के कामदेव तुमने काम को मारा।
छह खण्ड भोग करके भी निज ब्रह्म निहारा॥
तीर्थंकरों में तीन पद धारी प्रथम हुये।
सम्यक्त्व बल से भाव सहज ही प्रशम हुये॥
आया विरागभाव फिर किसी की न सुनी।
ममता को त्याग करके बन गये महामुनि॥
चिद्रूप साधना का फल दिखाया आपने।
जब पूर्ण ज्ञान को सहज ही पाया आपने॥
भव सिन्धु में पतित हुऐ जीवों को बचाया।
जब धर्मदेशना में मोक्ष मार्ग बताया॥

ध्याया जो शुक्लध्यान अघाति को नशाया॥
सम्मेद शैल से प्रभु! निर्वाण को पाया॥
आनन्दकन्द आत्मा के आप हो धनी।
चैतन्यरस की हो रही वर्षा घनी-घनी॥
हे नाथ! अपने जैसा आत्मध्यान दीजिये।
आया हूँ शरण आपकी कल्याण कीजिये॥

दोहा

हर्ष भाव से ही किया, जयमाला गुणगान।
है 'विमर्श' चरणों यही, पाऊँ प्रभु निर्वाण॥

ॐ ह्रीं शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ तुमको नमूँ, धर चरणों में शीष।
शांति करो मम हृदय में, करुणासिंधु ऋषीश॥

(परिपुष्पांजलि क्षिपामि)

''चैत्य गुरु प्रवचन पूजादि लक्षणा
सम्यक्त्ववर्धनी क्रिया सम्यक्त्व क्रिया।''

अर्थ—चैत्य, गुरु और शास्त्र की पूजा आदि रूप क्रिया सम्यक्त्व को बढ़ाने वाली है, अतः सम्यक्त्व क्रिया है।